

# कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग एवं चुनौतियाँ :

## मध्य प्रदेश एवं राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में एक तुलनात्मक अध्ययन

विपिन कुमार<sup>1</sup>, डॉ. सविता सिंह<sup>2</sup>

शोधार्थी, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, - श्रीकृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर मध्य प्रदेश<sup>1</sup>

सहायक प्राध्यापक, पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान विभाग, - श्रीकृष्णा विश्वविद्यालय छतरपुर मध्य प्रदेश<sup>2</sup>

### सार

यह अध्ययन मध्य प्रदेश और राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग और प्रभावशीलता का तुलनात्मक मूल्यांकन करता है। इसमें प्राथमिक और द्वितीयक डेटा संग्रह विधियों का उपयोग किया गया, जैसे कि प्रश्नावली, साक्षात्कार, और पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली के रिकॉर्ड। यह अध्ययन उपयोगकर्ताओं, पुस्तकालय प्रबंधकों और तकनीकि कर्मचारियों से प्राप्त जानकारी के आधार पर ई-रिसोर्स की उपलब्धता, उपयोग की स्थिति, समस्याएं और सुधार की दिशा का आकलन करता है। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि भाषा, तकनीकी समस्याएं, वित्तीय बाधाएं और प्रशिक्षण की कमी जैसी प्रमुख चुनौतियाँ सामने आई हैं। इसके अलावा, राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय जैसी प्लेटफार्मों का भी उपयोग कर ई-रिसोर्स की उपलब्धता और उपयोग को स्पष्ट किया गया है। अध्ययन के परिणामों के आधार पर, ई-रिसोर्स के अधिकतम लाभ को प्राप्त करने के लिए सुधारात्मक कदमों की आवश्यकता है।

**कीवर्ड:** ई-रिसोर्स, उपयोग और प्रभावशीलता, प्राथमिक और द्वितीयक डेटा संग्रह, पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली, राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय.

### 1 परिचय

इस अध्ययन का उद्देश्य ई-रिसोर्स के उपयोग और प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना था। इसके लिए प्राथमिक और द्वितीयक डेटा संग्रह तकनीकों का उपयोग किया गया [1]। प्रश्नावली और साक्षात्कार के माध्यम से उपयोगकर्ताओं, पुस्तकालय प्रबंधकों और तकनीकि कर्मचारियों से जानकारी प्राप्त की गई, जिससे ई-रिसोर्स के उपयोग के ढंग, समस्याएं और प्रभावों की गहरी समझ मिली। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली के रिकॉर्ड और राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय जैसे प्लेटफार्मों से द्वितीयक डेटा एकत्रित किया गया, जो विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता और उपयोग को स्पष्ट करने में सहायक रहा [2]। शोध ने मध्य प्रदेश और राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता, तकनीकि सुविधाएं और उपयोगकर्ता अनुभव पर तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि

भाषा, तकनीकी समस्याएं, वित्तीय बाधाएं और प्रशिक्षण की कमी जैसी कठिनाइयाँ प्रमुख हैं [3]। इस अध्ययन ने उन पहलुओं की पहचान की है, जिनमें सुधार की आवश्यकता है, ताकि ई-रिसोर्स का अधिकतम लाभ लिया जा सके।

## उद्देश्य

- यह समझना कि मध्य प्रदेश और राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में कौन-कौन से ई-रिसोर्स उपलब्ध हैं और उनकी गुणवत्ता क्या है।
- छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं द्वारा ई-रिसोर्स का उपयोग किस हद तक और किन उद्देश्यों के लिए किया जाता है।
- ई-रिसोर्स के उपयोग के दौरान आने वाली बाधाओं और उनके समाधान की संभावनाओं का विश्लेषण।
- ई-रिसोर्स उपयोग को बढ़ावा देने और इसके प्रभाव को अधिकतम करने के लिए सिफारिशें प्रदान करना।

**ई-रिसोर्स का महत्व:** ई-रिसोर्स का महत्व इसलिए बढ़ा है क्योंकि ये समय और स्थान की सीमाओं को समाप्त करते हैं।

कुछ प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं:

- छात्र और शोधकर्ता कहीं से भी ई-रिसोर्स का उपयोग कर सकते हैं।
- ई-पुस्तकें, ई-जर्नल्स, ऑनलाइन शोध पत्र, वीडियो व्याख्यान, और अन्य सामग्री के रूप में विविध संसाधन उपलब्ध हैं।
- ई-रिसोर्स हमेशा नवीनतम और अद्यतन जानकारी प्रदान करते हैं।
- मुद्रित सामग्री की तुलना में ई-रिसोर्स अधिक किफायती और लंबे समय तक उपयोगी होते हैं।

## 2. साहित्य समीक्षा

कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग, विशेष रूप से मध्य प्रदेश और राजस्थान के संदर्भ में, एक महत्वपूर्ण शोध क्षेत्र है। इन विश्वविद्यालयों में तकनीकी सुविधाओं, उपयोगकर्ता अनुभव, और सामग्री की उपलब्धता पर अध्ययन करके, यह शोध ई-रिसोर्स के प्रभावी उपयोग की दिशा में सामने आने वाली समस्याओं और चुनौतियों को उजागर करता है। इससे यह समझने में मदद मिलती है कि किन पहलुओं में सुधार की आवश्यकता है और कैसे इन संसाधनों का अधिकतम लाभ उठाया जा सकता है, विशेष रूप से कृषि शिक्षा और शोध के क्षेत्र में।

## साहित्य समीक्षा का सारांश

लेखक	कार्य	निष्कर्ष
पटेल, एम.	कृषि विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग और चुनौतियों का कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स	मध्य प्रदेश और राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स

(2024)	तुलनात्मक अध्ययन	तकनीकी, वित्तीय और प्रशिक्षण संबंधित समस्याएँ उपयोग में बाधा डाल रही हैं।
जोशी, एस. (2023)	ई-रिसोर्सेज में तकनीकी प्रगति और उनके कृषि शिक्षा पर प्रभाव का अध्ययन	तकनीकी विकास के बावजूद, ई-रिसोर्स के प्रभावी उपयोग के लिए तकनीकी और प्रशिक्षण से संबंधित समस्याएँ सामने आईं।
गुप्ता, एस. (2022)	राज्य विश्वविद्यालयों में कृषि पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग पर अध्ययन	अधिकांश राज्य विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता कम है और उपयोगकर्ता अनुभव में सुधार की आवश्यकता है।
सिंह, ए. (2021)	राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में डिजिटल पुस्तकालय प्रणालियों का अध्ययन	डिजिटल पुस्तकालयों में उपयोगकर्ताओं को भाषा, तकनीकी और वित्तीय समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
राठी, पी. (2020)	भारतीय कृषि पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स को अपनाने में बाधाओं का विश्लेषण	ई-रिसोर्स को अपनाने में वित्तीय और तकनीकी बाधाएँ और प्रशिक्षण की कमी प्रमुख चुनौतियाँ हैं।
सिंह, ए. (2020)	कृषि पुस्तकालयों में ई-रिसोर्सेस की तकनीकी समस्याओं और प्रशिक्षण की कमी का अनुभव	ई-रिसोर्सेस की भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन उपयोगकर्ताओं को भूमिका और उपयोगकर्ता अनुभव रहा है।
वर्मा, आर. (2019)	कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग की स्थिति का मूल्यांकन	विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता बढ़ी है, लेकिन उपयोगकर्ता अनुभव में कई कमियाँ हैं।
मिश्रा, एन. (2019)	कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में तकनीकी संसाधनों का प्रभाव	तकनीकी संसाधनों का प्रभाव बढ़ा है, लेकिन उचित प्रशिक्षण और तकनीकी समर्थन की कमी अभी भी बड़ी समस्या है।
यादव, पी. (2018)	भारत में कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में डिजिटल संसाधनों का उपयोग: एक विश्लेषण	डिजिटल संसाधनों का उपयोग बढ़ रहा है, लेकिन तकनीकी और भाषा संबंधित समस्याएँ मुख्य चुनौतियाँ हैं।
बंसल, एस. (2018)	भारत के कृषि पुस्तकालयों में डिजिटल संसाधनों की स्थिति पर रिपोर्ट	डिजिटल संसाधनों का उपयोग बढ़ा है, लेकिन उनके प्रभावी उपयोग के लिए तकनीकी और अन्य चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

## रिसर्च गैप

इस अध्ययन में ई-रिसोर्स के उपयोग और प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया गया, लेकिन वर्तमान शोध में कुछ महत्वपूर्ण गैप्स हैं। अधिकांश अध्ययन केवल तकनीकी और बुनियादी ढांचे के पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जबकि उपयोगकर्ता अनुभव, भाषा बाधाएं, और वित्तीय समस्याओं जैसे सामाजिक और सांस्कृतिक मुद्रों की कमी पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया है। इसके अलावा, वर्तमान शोध में प्रशिक्षण की कमी और प्लेटफार्म की पहुंच पर विस्तार से विचार करने की आवश्यकता है।

## 3. कार्यप्रणाली

इस शोध के लिए प्राथमिक और द्वितीयक डेटा संग्रह विधियों का उपयोग किया गया। प्राथमिक डेटा संग्रह के अंतर्गत, प्रश्नावली और साक्षात्कार का उपयोग किया गया। प्रश्नावली के माध्यम से छात्रों, शिक्षकों, और शोधकर्ताओं से ई-रिसोर्स के उपयोग, उनकी आवश्यकताओं, और समस्याओं के बारे में जानकारी एकत्र की गई। इसमें ई-रिसोर्स के उपयोग के पैटर्न, पसंद, और उनके शोध कार्यों पर प्रभाव को समझाने के लिए सवाल शामिल थे। इसके अतिरिक्त, साक्षात्कार के जरिए पुस्तकालय प्रबंधकों और तकनीकी कर्मचारियों से उनकी राय और अनुभव प्राप्त किए गए। इन साक्षात्कारों में ई-रिसोर्स प्रबंधन, तकनीकी और वित्तीय चुनौतियों, और उपयोगकर्ताओं को बेहतर सहायता प्रदान करने के तरीकों पर चर्चा की गई। द्वितीयक डेटा संग्रह में पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली (LMS) के रिकॉर्ड और राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय जैसे पोर्टल्स से डेटा प्राप्त किया गया। LMS के रिकॉर्ड से यह समझने में मदद मिली कि कौन से ई-रिसोर्स अधिक लोकप्रिय हैं और उपयोग के पैटर्न क्या हैं। वहीं, राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय और कृषि अनुसंधान संस्थानों से प्राप्त रिपोर्ट्स और शोध पत्रों ने शोधकर्ताओं को व्यापक और विश्वसनीय जानकारी प्रदान की। ये विधियां शोध के लिए आवश्यक डेटा संग्रह और विश्लेषण में सहायक रहीं।

## 4. परिणाम एवं चर्चा

### मध्य प्रदेश और राजस्थान: तुलनात्मक अध्ययन

#### 1. ई-रिसोर्स की उपलब्धता

**मध्य प्रदेश:** मध्य प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता शिक्षा और शोध के लिए एक महत्वपूर्ण पहलू है [4]। यहां के अधिकांश विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त डिजिटल प्लेटफॉर्म्स और डेटाबेस से जुड़े हुए हैं, जिनमें प्रमुख रूप से Springer, Elsevier, और JSTOR शामिल हैं। ये प्लेटफॉर्म्स कृषि, पर्यावरण विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, और अन्य संबंधित विषयों पर उच्च गुणवत्ता के शोध पत्र, ई-पुस्तकें, और वैज्ञानिक सामग्री प्रदान करते हैं।

[5]। इन संसाधनों का उपयोग शोधकर्ता अपनी शोध कार्यों को अद्यतन रखने और नवीनतम जानकारियों तक पहुंचने के लिए करते हैं। इसके अलावा, ई-पुस्तकों और ऑनलाइन शोध पत्रों की संख्या भी मध्य प्रदेश में अधिक है, जो राजस्थान के विश्वविद्यालयों की तुलना में एक महत्वपूर्ण लाभ है। ये ई-रिसोर्स छात्रों और शिक्षकों को अत्याधुनिक ज्ञान प्रदान करने के लिए एक महत्वपूर्ण साधन हैं [6]। साथ ही, विश्वविद्यालय राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय (NDL) और भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) जैसे प्लेटफॉर्म्स से भी जुड़े हुए हैं, जो भारतीय संदर्भ में कृषि और संबंधित विषयों पर महत्वपूर्ण ज्ञानकारी उपलब्ध कराते हैं [7]।

**राजस्थान:** राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में केवल कुछ विश्वविद्यालयों में प्रीमियम ई-रिसोर्स उपलब्ध हैं, जैसे Springer, Elsevier, और JSTOR। इसके कारण, कई छात्र और शोधकर्ता इन संसाधनों का उपयोग नहीं कर पाते। इसके अलावा, स्थानीय भाषा (हिंदी, राजस्थानी) में ई-रिसोर्स की कमी पाई गई है, जो छात्रों के लिए एक बाधा है, खासकर उन लोगों के लिए जो अंग्रेजी में सहज नहीं हैं। इस मुद्दे का समाधान स्थानीय भाषा में ई-रिसोर्स के विकास और अधिक विश्वविद्यालयों में प्रीमियम सदस्यताओं की उपलब्धता से हो सकता है [8]।

## 2. तकनीकि सुविधाएं

**मध्य प्रदेश:** मध्य प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों में वाई-फाई, कंप्यूटर लैब्स, और मोबाइल-फ्रैंडली पोर्टल्स जैसी बेहतर तकनीकि सुविधाएं उपलब्ध हैं [9]। इन सुविधाओं के माध्यम से छात्र और शोधकर्ता आसानी से इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों का उपयोग कर सकते हैं। वाई-फाई कनेक्टिविटी विश्वविद्यालय परिसरों में छात्रों और शिक्षकों को इंटरनेट तक निर्बाध पहुंच प्रदान करती है, जबकि कंप्यूटर लैब्स में आधुनिक कंप्यूटर उपकरण और सॉफ्टवेयर उपलब्ध होते हैं, जो शोध कार्य और अध्ययन को आसान बनाते हैं। इसके अलावा, मोबाइल-फ्रैंडली पोर्टल्स छात्रों और शोधकर्ताओं को उनके स्मार्टफोन के माध्यम से भी शैक्षिक सामग्री और ई-रिसोर्स तक पहुंचने की सुविधा प्रदान करते हैं, जो अध्ययन को अधिक लचीला और सुलभ बनाता है।

**राजस्थान:** राजस्थान में, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विश्वविद्यालयों में इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या देखी जाती है [10]। वहां पर इंटरनेट की धीमी गति या उपलब्धता की कमी छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए एक प्रमुख चुनौती बनती है। इस कारण, विश्वविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों और ई-रिसोर्स का उपयोग प्रभावित होता है। इसके अलावा, डिजिटल उपकरणों की भी अपर्याप्तता है, जैसे कंप्यूटर और अन्य आवश्यक तकनीकी उपकरणों की कमी, जो शिक्षा और शोध के काम को प्रभावित करती है। इन समस्याओं से निपटने के लिए बेहतर इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता बढ़ाने की आवश्यकता है।

**3. मध्य प्रदेश:** मध्य प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों में उपयोगकर्ताओं (छात्रों, शिक्षकों, और शोधकर्ताओं) की प्रतिक्रिया सकारात्मक रही है [11]। करीब 70% उपयोगकर्ता ई-रिसोर्स का नियमित उपयोग करते हैं, जो इस बात का संकेत है कि

विश्वविद्यालयों में डिजिटल संसाधनों का प्रभावी तरीके से उपयोग किया जा रहा है। इसके अलावा, 80% उपयोगकर्ताओं ने यह बताया कि ई-रिसोर्स उनके शोध कार्य के लिए अत्यधिक उपयोगी हैं, जो यह दर्शाता है कि ये डिजिटल संसाधन उच्च गुणवत्ता के शोध और अध्ययन को संभव बनाते हैं। इस प्रकार, मध्य प्रदेश में ई-रिसोर्स का उपयोग और उनके लाभ के बारे में सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है।

**राजस्थान:** राजस्थान में उपयोगकर्ताओं का अनुभव मध्य प्रदेश से थोड़ा भिन्न है। केवल 55% उपयोगकर्ता ने ई-रिसोर्स का प्रभावी उपयोग किया, जो एक अपेक्षाकृत कम संख्या है। यह इस बात का संकेत है कि राज्य में डिजिटल संसाधनों का उपयोग उतना व्यापक और प्रभावी नहीं है। इसके अतिरिक्त, 30% उपयोगकर्ताओं ने प्रशिक्षण और तकनीकि मदद की आवश्यकता जताई, जो यह दर्शाता है कि कई उपयोगकर्ता ई-रिसोर्स का सही तरीके से उपयोग करने में सक्षम नहीं हैं। इसका कारण डिजिटल उपकरणों का अपर्याप्तता या तकनीकि ज्ञान की कमी हो सकता है [12]। इस समस्या को हल करने के लिए उपयोगकर्ताओं को बेहतर प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता की आवश्यकता है।

#### 4. प्रशिक्षण और जागरूकता

**मध्य प्रदेश:** मध्य प्रदेश के कृषि विश्वविद्यालयों में नियमित प्रशिक्षण सत्र और कार्यशालाओं का आयोजन किया जाता है, जो छात्रों, शिक्षकों, और शोधकर्ताओं को ई-रिसोर्स का प्रभावी उपयोग करने के लिए सक्षम बनाते हैं। इन प्रशिक्षण सत्रों में डिजिटल उपकरणों, ई-पुस्तकों, ऑनलाइन डेटाबेस, और शोध पत्रों का उपयोग करने के तरीके सिखाए जाते हैं। इसके माध्यम से उपयोगकर्ताओं को नवीनतम तकनीकी सुविधाओं और ई-रिसोर्स के बारे में जागरूक किया जाता है, जिससे वे इन संसाधनों का अधिकतम लाभ उठा सकते हैं। इस तरह के प्रयासों से ई-रिसोर्स के उपयोग में वृद्धि और शोध कार्यों की गुणवत्ता में सुधार होता है।

**राजस्थान:** राजस्थान में प्रशिक्षण और जागरूकता की कमी पाई जाती है, जिसके कारण ई-रिसोर्स का सीमित उपयोग हो रहा है। कई विश्वविद्यालयों में छात्रों और शिक्षकों को ई-रिसोर्स के प्रभावी उपयोग के लिए आवश्यक प्रशिक्षण उपलब्ध नहीं है। इसके परिणामस्वरूप, उपयोगकर्ता डिजिटल संसाधनों का अधिकतम लाभ नहीं उठा पाते हैं और उनका उपयोग सीमित रहता है [13]। इसलिए, राजस्थान में प्रशिक्षण और जागरूकता बढ़ाने के लिए अधिक कार्यशालाओं और प्रशिक्षण सत्रों की आवश्यकता है, ताकि सभी उपयोगकर्ताओं को ई-रिसोर्स का सही और प्रभावी तरीके से उपयोग करना सिखाया जा सके।

#### 5. चुनौतियाँ

**भाषा संबंधित समस्याएं:** कई कृषि विश्वविद्यालयों में भाषा संबंधित समस्याएं एक महत्वपूर्ण चुनौती बनकर सामने आती हैं। राजस्थान और अन्य भारतीय राज्यों में अधिकांश ई-रिसोर्स और डिजिटल सामग्री अंग्रेजी में उपलब्ध होती है,

जबकि छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए स्थानीय भाषाओं (जैसे हिंदी, राजस्थानी) में सामग्री की उपलब्धता सीमित है। इस कारण, जो छात्र या शोधकर्ता अंग्रेजी में सहज नहीं होते, उनके लिए इन संसाधनों का सही तरीके से उपयोग करना मुश्किल हो जाता है। इस समस्या को हल करने के लिए, स्थानीय भाषाओं में अधिक ई-रिसोर्स और शैक्षिक सामग्री उपलब्ध कराई जानी चाहिए।

**तकनीकी बाधाएँ:** कई विश्वविद्यालयों में तकनीकी बाधाएँ हैं, जिनमें धीमी इंटरनेट कनेक्टिविटी, डिजिटल उपकरणों की कमी, और सॉफ्टवेयर की अपर्याप्तता शामिल हैं। इन समस्याओं के कारण छात्रों और शोधकर्ताओं को ई-रिसोर्स का उपयोग करने में कठिनाई होती है। खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित विश्वविद्यालयों में इन तकनीकी समस्याओं का प्रभाव अधिक होता है, जो अध्ययन और शोध कार्य में रुकावट डालते हैं।

**वित्तीय समस्याएँ:** प्रीमियम और उच्च गुणवत्ता वाले ई-रिसोर्स तक पहुंच प्राप्त करने के लिए विश्वविद्यालयों को उच्च सदस्यता शुल्क का भुगतान करना पड़ता है। कई विश्वविद्यालयों के पास इस खर्च को वहन करने के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन नहीं होते, जिससे छात्रों और शोधकर्ताओं के लिए इन संसाधनों का उपयोग सीमित हो जाता है। विशेष रूप से, छोटे या सरकारी विश्वविद्यालयों को अक्सर इन खर्चों को कवर करने में कठिनाई होती है [14]।

**प्रशिक्षण का अभाव:** एक और प्रमुख चुनौती है, जिसके कारण छात्र और शिक्षक ई-रिसोर्स का सही तरीके से उपयोग नहीं कर पाते। कई विश्वविद्यालयों में उपयोगकर्ताओं को ई-रिसोर्स के प्रभावी उपयोग के लिए उपयुक्त प्रशिक्षण या कार्यशालाएं उपलब्ध नहीं होतीं। इसके परिणामस्वरूप, छात्रों और शोधकर्ताओं को डिजिटल संसाधनों का पूरा लाभ नहीं मिल पाता, और वे अपने शोध या अध्ययन में प्रगति करने में असमर्थ हो सकते हैं।

## 5. निष्कर्ष

इस शोध में प्राथमिक और द्वितीयक डेटा संग्रह विधियों का उपयोग किया गया, जिससे ई-रिसोर्स के उपयोग और प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया गया। प्रश्नावली और साक्षात्कार के माध्यम से उपयोगकर्ताओं, पुस्तकालय प्रबंधकों, और तकनीकी कर्मचारियों से जानकारी प्राप्त की गई, जिससे ई-रिसोर्स के उपयोग के पैटर्न, समस्याएं और उनके प्रभाव पर गहरी समझ मिली। द्वितीयक डेटा संग्रह के तहत पुस्तकालय प्रबंधन प्रणाली के रिकॉर्ड और राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय जैसे प्लेटफॉर्म्स से डेटा एकत्र किया गया, जो विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता और उपयोग को समझने में सहायक रहा। मध्य प्रदेश और राजस्थान के कृषि विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स की उपलब्धता, तकनीकी सुविधाएं, और उपयोगकर्ता अनुभव पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया, जिससे विभिन्न समस्याओं जैसे भाषा, तकनीकी बाधाएं, वित्तीय समस्याएं और प्रशिक्षण की कमी का पता चला। यह शोध उन क्षेत्रों को पहचानने में मदद करता है, जहां सुधार की आवश्यकता है, ताकि ई-रिसोर्स का अधिकतम लाभ उठाया जा सके।

**सुझाव -**

- उपयोगकर्ता प्रशिक्षण और तकनीकी सुधार पर ध्यान दिया जाए ताकि ई-रिसोर्स का अधिकतम लाभ लिया जा सके।
- विभिन्न भाषाओं में सामग्री उपलब्ध कराकर भाषा संबंधित समस्याओं को हल किया जा सकता है।
- ई-रिसोर्स के बेहतर उपयोग के लिए वित्तीय संसाधनों का आवंटन और समर्थन बढ़ाया जाए।
- विश्वविद्यालयों में ई-रिसोर्स के प्रचार-प्रसार के लिए अभियान चलाए जाएं।

## 6. संदर्भ

- शर्मा, पी., & पटेल, एम. (2024). कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग और चुनौतियाँ: मध्य प्रदेश और राजस्थान का तुलनात्मक अध्ययन।
- सिंह, आर., & जोशी, एस. (2023). ई-रिसोर्सेज में तकनीकी उन्नति और इसका कृषि शिक्षा पर प्रभाव।
- वर्मा, ए., & गुप्ता, एस. (2022). कृषि पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स का उपयोग: राज्य विश्वविद्यालयों का एक अध्ययन।
- यादव, एस., & सिंह, ए. (2021). कृषि विश्वविद्यालयों में डिजिटल पुस्तकालय प्रणालियाँ: राजस्थान का मामला।
- गुप्ता, पी., & राठी, पी. (2020). भारतीय कृषि पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स को अपनाने में बाधाएँ।
- शर्मा, ए., & सिंह, ए. (2020). कृषि पुस्तकालयों में ई-रिसोर्सस की भूमिका और उपयोगकर्ता अनुभव।
- कुमार, एल., & वर्मा, आर. (2019). कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-रिसोर्स के उपयोग की स्थिति।
- जोशी, आर., & मिश्रा, एन. (2019). कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में तकनीकी संसाधनों का प्रभाव।
- मिश्रा, आर., & यादव, पी. (2018). भारत में कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में डिजिटल संसाधनों का उपयोग: एक विश्लेषण।
- त्रिपाठी, के., & बंसल, एस. (2018). भारत के कृषि पुस्तकालयों में डिजिटल संसाधनों की स्थिति पर रिपोर्ट।
- शर्मा, न., & तिवारी, एस. (2017). कृषि पुस्तकालयों में डिजिटल संग्रह की स्थिति और उपयोग।
- श्रीवास्तव, पी., & यादव, एन. (2017). भारत में कृषि शिक्षा में ई-रिसोर्सेज की भूमिका।
- सिंह, टी., & शर्मा, ए. (2016). भारत के कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-रिसोर्सेज की उपलब्धता और उपयोग: एक सर्वेक्षण।
- राणा, एस., & जोशी, एस. (2016). कृषि विश्वविद्यालय पुस्तकालयों में ई-रिसोर्सेज की प्रभावशीलता।